

स्वर्णिम धागा

इस अध्ययन के लिए मैंने जिन संसाधन पुस्तकों का उपयोग किया, उनमें से एक, डी.ए. गैरेट की "निर्गमन पर टीका", उत्पत्ति और निर्गमन की पुस्तकों के बीच के अंतर को पूरी तरह से संक्षेप में प्रस्तुत करती है, साथ ही उस पुस्तक के आवश्यक उद्देश्य को भी बताती है जिसे हम अध्ययन करने जा रहे हैं – निर्गमन की पुस्तक। यहाँ संबंधित अंश है:

"निर्गमन इस्राएल की कहानी की सच्ची शुरुआत है। उत्पत्ति कहानी के लिए आवश्यक है, लेकिन यह एक प्रस्तावना है, जो एक व्यक्ति पैत्रिकों के जीवन का वर्णन करती है न कि एक लोगों के इतिहास का। निर्गमन के साथ हम उस राष्ट्रीय इकाई इस्राएल की कहानी शुरू करते हैं।"

- डी.ए. गैरेट

दूसरे शब्दों में, उत्पत्ति में वह दृश्य प्रस्तुत किया गया है जिसके लिए बाइबल लिखी गई है:

1. प्राकृतिक संसार कैसे और किसके द्वारा अस्तित्व में आया।
2. विवरण मानव जाति की सृष्टि, उद्देश्य, पाप में पतन और इस पापी स्थिति के परिणामों को समझाते हैं।
3. उत्पत्ति में परमेश्वर के एक अंततः उद्धारकर्ता भेजने के वादे का भी उल्लेख है और एक व्यक्ति, अब्राहम/अब्राहम, के चयन का, जिसके माध्यम से वह उद्धारकर्ता भेजेगा।
4. यह पुस्तक इस एक व्यक्ति के परिवार के विस्तार पर समाप्त होती है, जो बारह परिवारों के कुल में बढ़ता है, प्रत्येक परिवार इस एक व्यक्ति अब्राहम के वंशजों द्वारा नेतृत्व किया जाता है, जिन्हें परमेश्वर ने चुना है।

उत्पत्ति की पुस्तक लगभग 2,200 वर्षों की अवधि को कवर करती है। यह संसार की सृष्टि से शुरू होकर याकूब और उसके परिवार के मिस्र में आगमन तक की जानकारी प्रदान करती है, जहाँ वे जोसेफ से जुड़ते हैं, जो उनका खोया हुआ पुत्र था और मिस्र के राजा के बाद दूसरे स्थान पर था।

इस अवधि के दौरान संसार आबाद होना शुरू हुआ, न केवल एक बार, बल्कि नूह के समय के महान बाढ़ के कारण दो बार:

- राष्ट्र बने
- शहर बनाए गए
- युद्ध लड़े गए

- आविष्कार, नवाचार, और भाषाएँ विकसित हुई, जिससे लोगों और घटनाओं का एक समृद्ध इतिहास बना जिसे आज पुरातत्वविदों और इतिहासकारों द्वारा अध्ययन किया जाता है।

बाइबल, हालांकि, इन इतिहासों में केवल इस हद तक रुचि रखती है जब वे समय-समय पर उस एक परिवार के इतिहास के साथ मिलते हैं जो अब्राहम द्वारा शुरू किया गया था, वह व्यक्ति जिसे परमेश्वर ने एक विशेष उद्देश्य के लिए चुना था। ऐसा है जैसे बाइबल में विश्व का इतिहास एक धूसर पृष्ठभूमि हो और अब्राहम और उसके वंशजों की कहानी एक चमकीली, सुनहरी धागा हो जो उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक फैला हो। चाहे दुनिया में कुछ भी हो रहा हो, बड़ा या छोटा, वह सुनहरी धागा अब्राहम के साथ अपनी शुरुआत से हर इतिहास के अध्याय में दिखाई देता है जब तक कि वह अपने प्राकृतिक पूर्णता और अंत बिंदु यीशु मसीह में न पा ले। हम इसकी शुरुआत उत्पत्ति में देखते हैं जब बारह परिवारों का गठन होता है जो विभिन्न परिस्थितियों के कारण अकाल के कारण मिस्र में अस्थायी रूप से निवास करते हैं।

निर्गमन में हम उस स्वर्णिम धागे का अनुसरण करेंगे क्योंकि हम देखते हैं कि परिवारों का वह कुल एक राष्ट्र में परिवर्तित हो जाता है और देखते हैं कि वह राष्ट्र:

- सच्चे परमेश्वर, "मैं हूँ," यहोवा परमेश्वर को जानना, जो अब उनका एकमात्र परमेश्वर होगा।
- हम मिस्र को विपत्तियों से तोड़ने की उसकी शक्ति को देखेंगे ताकि यहूदी लोगों को मुक्त किया जा सके।
- निर्गमन में औपचारिक व्यवस्था और नियम दिए गए हैं जो राष्ट्र को परमेश्वर से बांधेंगे और उनके जीवन के हर भाग को सूचित करेंगे।
- इस पुस्तक में उनका बलिदान प्रणाली, पूजा का तरीका, पुरोहितत्व और पूजा स्थल दिया गया है।

दूसरे शब्दों में, जो कुछ भी इन लोगों को परमेश्वर के लोगों के रूप में विशिष्ट और पृथक बनाता है, वह सब निर्गमन की पुस्तक में प्रस्तुत, आरंभ और समझाया गया है।

लेखकत्व और तिथि

ए. निर्गमन पेंटाट्यूक का हिस्सा है जो बाइबल की पहली पाँच पुस्तकों (उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण) के लिए प्रयुक्त शब्द है जो पुराने नियम में हैं। पेंटाट्यूक दो ग्रीक शब्दों से बना है: पेंटा = पाँच और टेउचोस = स्क्रॉल।

यहूदी पुराने नियम को हिब्रू बाइबल कहते हैं और पहले पांच पुस्तकों को तोराह, या मूसा की पांच पुस्तकें, या कानून की पुस्तकें कहते हैं। मूसा को परंपरागत रूप से इस पुस्तक का लेखक माना गया है, हालांकि पुस्तक स्वयं अपने लेखक का उल्लेख नहीं करती, फिर भी:

1. लेखक उन घटनाओं से गहराई से परिचित था जो पुस्तक में हुई।

2. लेखक के पास ऐसी जानकारी थी जो केवल मूसा ही जान सकता था (जैसे, उसका परमेश्वर के साथ संवाद)।

3. लेखक उस समय हुई चमत्कारिक घटनाओं (अच्छी और बुरी दोनों) का साक्षी और उपस्थित था।

संरक्षणवादी विद्वान मूसा को वह व्यक्ति मानते हैं जिसने मौखिक परंपराओं, वंशावली (निर्गमन 6:14-25) और व्यक्तिगत साक्षी विवरणों को एक व्यवस्थित अभिलेख में संकलित और दर्ज किया, जिसमें यहूदी लोगों का मिस्र से प्रस्थान, मरुभूमि में भटकाव और परमेश्वर के साथ उनके संबंध शामिल हैं।

क्या तुम्हें मूसा ने व्यवस्था का विधान नहीं दिया? पर तुममें से कोई भी उसका पालन नहीं करता। तुम मुझे मारने का प्रयत्न क्यों करते हो?”

- यूहन्ना 7:19

येशु स्वयं इसका साक्ष्य देते हैं।

⁴⁶ तो तुम मुझमें भी विश्वास करते क्योंकि उसने मेरे बारे में लिखा है। ⁴⁷ जब तुम, जो उसने लिखा है उसी में विश्वास नहीं करते, तो मेरे वचन में विश्वास कैसे करोगे?”

- यूहन्ना 5:46-47

बी. मूसा ने यह पुस्तक लगभग 1445-1400 ईसा पूर्व के बीच कहीं लिखी थी – एक पारंपरिक तिथि जो मूसा के जीवन को बाइबिल के इतिहास के संदर्भ में रखती है और अन्य पुराने नियम के पात्रों और घटनाओं की तिथियों के साथ मेल खाती है। कुछ आधुनिक आलोचनात्मक विद्वान यह अस्वीकार करते हैं कि मूसा ने यह पुस्तक लिखी और यह पुस्तक यहूदी निर्वासन के दौरान छठी सदी ईसा पूर्व में बाबुल में लिखी गई थी और यहूदीयों के यरूशलेम लौटने के बाद पूरी हुई। यह सिद्धांत यह स्पष्ट नहीं करता कि यीशु स्वयं ने कानून/तोरा की रचना मूसा को क्यों दी है जैसा कि हमने यूहन्ना 5:46-47 और यूहन्ना 7:19 में पढ़ा है।

मिस्र

(शब्द मेम्फिस के मूल नाम का उल्लेख करता है – प्ताह की आत्मा का आवास)।

ए। भूगोल – मिस्र – उत्तरपूर्वी अफ्रीका में देश



नील नदी ने मिस्र में मानव आवास को संभव बनाया। नदी स्वयं अपने स्रोत से दक्षिण में, लेक विक्टोरिया (आधुनिक युगांडा/तंजानिया में), बहती थी और उत्तर की ओर बहकर अंततः भूमध्य सागर में मिलती थी। यह विवाद है कि नील या अमेज़न विश्व की सबसे लंबी नदी है – अंतर केवल 40 मील हो सकता है।

अपने वार्षिक बाढ़ के साथ नील न केवल पीने का पानी प्रदान करता था बल्कि अपनी तटों पर मिट्टी जमा करता था ताकि फसलों की खेती के लिए उपजाऊ जमीन मिल सके – इस उपजाऊ पट्टी को नदी के पास काला भूमि कहा जाता था और इसके परे का रेगिस्तान लाल भूमि कहा जाता था।

नाइल नदी की घाटी मिस्र थी क्योंकि बाकी सब बंजर भूमि थी और रहने योग्य नहीं थी। प्राचीन राज्य का एक बड़ा हिस्सा, जो भूमध्य सागर के पास समृद्ध डेल्टा क्षेत्र के दक्षिण में था, सैकड़ों मील लंबा लेकिन केवल पाँच मील चौड़ा था – जहाँ लोग रह सकते थे।

मुख्य शहर, कृषि, धन, और जनसंख्या उत्तरी डेल्टा क्षेत्र जिसे लोअर इजिप्ट कहा जाता था और दक्षिणी पट्टी जिसे अपर इजिप्ट कहा जाता था में स्थित थे (चूंकि नील नदी दक्षिण से उत्तर की ओर बहती थी, इसलिए दक्षिणी क्षेत्र "ऊपर नदी" था)।

स्थान का ध्यान दें:

1. मेम्फिस पुरानी साम्राज्य के दौरान राजधानी था।
2. थीब्स नई साम्राज्य के दौरान राजधानी था।
3. गोशेन वह भूमि है जहाँ यहूदियों को यूसुफ़ द्वारा बसाया गया था।

मिस्र की भौगोलिक स्थिति ने इसे शत्रु के हमले से काफी हद तक सुरक्षित रखा:

- पूर्व में एक कठोर रेगिस्तान और लाल सागर था।
- पश्चिम में विशाल सहारा रेगिस्तान था।
- उत्तर में महान भूमध्य सागर था।
- दक्षिण में नील नदी में प्राकृतिक जलप्रपात थे, जो नौसैनिक हमले को बहुत कठिन बना देते थे।

सबसे बड़ी कमजोरी उत्तरी मार्ग में एक स्थलमार्ग था जो डेल्टा क्षेत्र को कनानी भूमि और बाद में इस्राएलियों से जोड़ता था। उनकी सबसे बड़ी ताकत वह भोजन की प्रचुरता थी जो वे उगाते थे और अन्य देशों को निर्यात करते थे।

उनके पास सोने और कीमती पत्थरों की भी प्रचुरता थी जो उनके द्वारा बनाए गए सुंदर कलाकृतियों में दिखाई देती थी। फिरौनों द्वारा शासित मिस्र 3,000 वर्षों तक चला। यह पहला विश्व शक्ति था। इसका इतिहास 11 प्रमुख युगों में विभाजित किया जा सकता है और इनका संक्षिप्त अवलोकन करते हुए हम यह भी देख सकते हैं कि यहूदी लोग मिस्र के साथ कहाँ संपर्क में आते हैं।

विद्वानों ने निर्गमन की तिथि 1447 ईसा पूर्व बताई है। हालांकि, सटीक तिथि, उस समय मिस्र के विशेष शासक और यहूदियों द्वारा 40 वर्षों तक जंगल में चले जाने का सटीक मार्ग लेकर बहुत विवाद है। इसका कारण यह है कि न तो बाइबल और न ही उस समय (3,500 वर्ष पहले) के उपलब्ध ऐतिहासिक अभिलेख हमें सटीक जानकारी प्रदान करते हैं, इसलिए हमें उन सटीक तिथियों और विवरणों को घोषित करते समय विनम्र होना चाहिए जिन्हें हम अध्ययन और समीक्षा के बाद शामिल करते हैं, क्योंकि न तो परमेश्वर और न ही संबंधित लोग कोई अभिलेख छोड़ गए थे।

जो हम निश्चित रूप से जानते हैं वे घटनाएँ और उनका क्रम हैं, साथ ही शामिल पात्र भी क्योंकि परमेश्वर ने इन्हें उस स्वर्णिम धागे के रूप में संरक्षित किया है जो मानव इतिहास को जोड़ता है और यह कहानी प्रकट करता है कि कैसे उसने अंततः पाप के परिणामों से मानव जाति को बचाया।

निर्गमन का सारांश और उद्देश्य

निर्गमन सबसे पहले एक ऐतिहासिक अभिलेख है जो उस समय और घटनाओं का पता लगाता है जो याकूब के वंशजों और उसके परिवार को मिस्र से ले जाते हैं, जहाँ वे कनान की भूमि में अकाल से बचने के लिए शरण लिए थे, जो उनका घर था, वापस एक लंबी यात्रा के माध्यम से रेगिस्तान में उस स्थान तक जहाँ वे लगभग 400 वर्ष पहले आए थे, लेकिन इस बार विजेताओं के रूप में अपने पूर्व आवासों में पुनः प्रवेश करने के लिए, परमेश्वर से वह भूमि प्राप्त करते हुए जो उनके पूर्वज, अब्राहम को वादा की गई थी।

निर्गमन उस वापसी यात्रा का इतिहास है और वह परिवर्तन जो परमेश्वर ने किया जब उन्होंने सचमुच मिस्र में रहने वाले एक दास जनसंख्या से बिना नेता, बिना उद्देश्य और बिना शक्ति के एक नया और विशिष्ट राष्ट्र

बनाया। यहूदी धर्म के संदर्भ में निर्गमन एक अधिक मौलिक पुस्तक है क्योंकि यह यहूदी इतिहास में उत्पत्ति की तुलना में अधिक केंद्रीय स्थान रखती है।

उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 6:20-25 के अनुसार जब एक इस्राएली बच्चा अपने माता-पिता से पूछता था कि वे इतने धार्मिक नियमों और विधान के अधीन क्यों हैं, तो उत्तर यह होता था, "हम मिस्र में फिरौन के दास थे, परन्तु यहोवा ने अपनी प्रबल हाथ से हमें मिस्र से बाहर निकाला..."

इस्राएल के लोगों के लिए उनकी स्थापना की घटना उत्पत्ति में दर्ज अब्राहम की बुलाहट नहीं थी, बल्कि निर्गमन की पुस्तक में वर्णित घटनाएँ थीं। एक विशिष्ट परमेश्वर के लोगों के रूप में उनका इतिहास, साथ ही वे धार्मिक प्रथाएँ जो इसे मार्गदर्शित और पुष्टि करती थीं, सभी निर्गमन में पाए जाते हैं, न कि उत्पत्ति में। निर्गमन यह व्याख्या प्रदान करता है कि यहूदी परमेश्वर के चुने हुए लोग थे।

मुख्य पात्र

1. यहूदी

उत्पत्ति यहूदी लोगों की पृष्ठभूमि प्रदान करता है और वे मिस्र में कैसे आए, यह बताता है। निर्गमन उन्हें पहले सात पदों में प्रस्तुत करता है और केवल यह जोड़ता है कि एक छोटे आरंभ से वे एक बड़ी और शक्तिशाली आबादी में बढ़े जो स्थानीय मिस्री आबादी के लिए खतरा बन गई। उनके बीच कोई नेता उल्लेखित नहीं है। समूह के रूप में कोई उनके पक्ष में नहीं बोला। वे अभी भी परिवार के बुजुर्गों द्वारा नेतृत्व किए गए कुलों का एक संघ थे।

2. परमेश्वर/यहोवा

उत्पत्ति में हम परमेश्वर की शक्ति को ब्रह्मांड की सृष्टि में और व्यक्तियों के साथ उसके व्यवहार और प्रकट होने में देखते हैं। निर्गमन में हम उसके स्वभाव के अन्य पहलुओं को देखना शुरू करते हैं। उदाहरण के लिए वह है:

ए। एक और सार्वभौमिक परमेश्वर

निर्गमन 3:14 में परमेश्वर स्वयं को "मैं हूँ" कहते हैं। यह उन्हें हर अन्य "देवता" से अलग करता है।

बी. क्रोध का परमेश्वर

मिस्र पर आए विपत्तियों से लेकर सीनाई पर्वत पर गरज और बिजली तक, परमेश्वर ने अपनी क्षमता को प्रदर्शित किया कि वह अपने शत्रुओं और अपनी अवज्ञाकारी जनता को दंडित और भयभीत कर सकता है।

सी। दया करने वाला परमेश्वर

दयालुता उसकी मुख्य विशेषता है, क्रोध नहीं। यह इस प्रकार प्रदर्शित होता है:

1. मानव पीड़ा (यहूदियों की मिस्री दासता) के प्रति उसकी करुणा।

2. जब यहूदी बार-बार शिकायत करते, कृतघ्न होते और विद्रोह करते थे, तब वह धैर्यपूर्वक सहन करता है।
3. उन्होंने स्वर्ण बछड़े के साथ उनके गंभीर पाप के बाद उन्हें क्षमा किया और पुनर्स्थापित किया।

डी. परमेश्वर जो पूरी तरह से अन्य है

वह पूरी तरह पवित्र है और मनुष्य से भिन्न है। मूसा को जलती हुई झाड़ी के पवित्र स्थान में प्रवेश करने के लिए अपने जूते उतारने पड़े, और परमेश्वर ने केवल मूसा के माध्यम से, जो उनका पवित्र सेवक था, लोगों के साथ संवाद किया।

ई. इस्राएल का परमेश्वर

यहूदी एक विशेष लोग बन गए दिव्य हस्तक्षेप के माध्यम से, एक संकेत कि परमेश्वर मनुष्यों के साथ विनाश किए बिना संवाद कर सकता है।

एफ। नैतिक कानून का परमेश्वर

ईश्वर के लोग उसके नियमों से बंधे हुए हैं जो पवित्र, धार्मिक, नैतिक और विशिष्ट हैं। यहाँ बात यह है कि कोई अन्य "ईश्वर" ने स्वयं को इस तरह व्यक्तिगत और गतिशील रूप में प्रकट नहीं किया। वह मनुष्य से ऊपर था न कि इसलिए कि मनुष्य ने उसे देवताओं में रखा था जैसा कि मिस्र के मूर्तिपूजक देवताओं के साथ हुआ था। वह मनुष्य से ऊपर था क्योंकि उसने अपने बारे में जो प्रकट किया था - प्रेम का ईश्वर होने के नाते, वह स्वाभाविक रूप से मनुष्य से ऊपर था जो उसके लिए स्वाभाविक स्थान था।

3. मूसा – परमेश्वर का पुरुष

निर्गमन की पुस्तक परमेश्वर की महिमा करना चाहती है, लेकिन यह मूसा को इस्राएल की जाति का संस्थापक भी स्थापित करती है:

- मूसा एक नया आदम, एक नया नूह, और एक नया याकूब है।

वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसे भगवान ने उसकी व्यक्तिगत कमजोरियों और गलतियों के बावजूद महानता के लिए ढाला है:

- वह अपने लोगों के नेता और उद्धारकर्ता के रूप में खुद को स्थापित करने की कोशिश में लापरवाही से एक मिस्री को मार देता है।
- वह स्वेच्छा से निर्वासन में रहता है और जंगल में एक चरवाहे के रूप में कम काम करता है।
- वह परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में बोलने से इनकार करता है, इसलिए परमेश्वर को यह कार्य करने के लिए उसका बड़ा भाई आरोन प्रदान करना पड़ता है।

- जब वह लोगों को सुनहरे बछड़े की पूजा करते देखता है, तो वह क्रोधित होकर उन पट्टिकाओं को जोर से फेंकता और तोड़ देता है जिन पर परमेश्वर ने आज्ञाएँ लिखी थीं।

फिर भी, परमेश्वर धैर्यपूर्वक उसे आध्यात्मिक परिपक्वता तक ले जाते हैं – यहाँ तक कि महानता तक क्योंकि, उसकी कमजोरियों के बावजूद, मूसा कभी परमेश्वर की विश्वसनीय सेवा को नहीं छोड़ता। यहां तक कि जब उसे बताया जाता है कि वह वचनित भूमि में प्रवेश नहीं करेगा क्योंकि उसने पानी निकालने के लिए बोलने के बजाय चट्टान को दो बार मारा (गिनती 20:11) तब भी वह अपनी पूरी क्षमता से परमेश्वर की विश्वसनीय सेवा करता रहता है।

मूसा महान हैं, साथ ही कमजोर और पापी लोगों के लिए एक सुलभ आदर्श हैं जो ईमानदारी से परमेश्वर को प्रसन्न करना और महत्वपूर्ण तथा गतिशील तरीकों से उसकी सेवा करना चाहते हैं।

4. मिस्र – सांसारिक शक्ति का प्रतीक

मिस्र हर उस सांसारिक शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है जिससे परमेश्वर के लोगों को हर युग में सामना करना पड़ा है। यह हर सांसारिक राज्य का प्रकार है जो परमेश्वर के राज्य के विरोध में है, आरंभ से लेकर इस चल रहे संघर्ष के अंतिम दिन तक, जब यीशु इसे एक बार और सभी के लिए नष्ट करने आएंगे। सांसारिक शक्तियाँ/राज्य जो:

- लकड़ी और पत्थर के देवताओं की पूजा करना
- शक्ति को कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित करना – फिरौन
- धर्मात्माओं को दबाना – दासता, हत्या, घृणा, अलगाव
- निर्णय लेने में मुख्य कारक के रूप में भौतिक समृद्धि पर अत्यधिक ध्यान
- अंधविश्वास को वैधता देना, अंधकारमय शक्ति का प्रभाव
- ईश्वर के राज्य की उपस्थिति, ज्ञान और कार्य को खुलेआम विरोध करना या कमतर दिखाना
- पतन का प्रतिनिधित्व करना और उसे सुविधाजनक बनाना

मिस्र, ठीक वैसे ही जैसे हर विश्व शक्ति ने (कुछ तरीकों से और कुछ समय के लिए अमेरिका को छोड़कर) इन सांसारिक साम्राज्यों के प्रतीकों को प्रदर्शित किया, जो यहूदी लोगों के साथ उनके व्यवहार में सभी दिखाई देते थे।

निर्गमन पहली बार स्वर्गीय राज्य के राजा की विशेषताओं को प्रकट करता है, साथ ही पृथ्वी के सबसे शक्तिशाली राज्यों को भी वश में करने और नष्ट करने की शक्ति और क्षमता को भी।

इसलिए, बाइबल की शुरुआत में मिस्रवासियों के साथ और पूरे बाइबल में अशूरियों या बाबुलवासियों के साथ, और बाइबल के अंत में प्रकाशितवाक्य में जहाँ परमेश्वर का राज्य पृथ्वी के सबसे महान राज्य (रोम) को परास्त करता है – कहानी एक ही है:

धरती पर परमेश्वर का राज्य (आज, चर्च) कभी भी एक सांसारिक राज्य द्वारा पराजित नहीं होगा – और यह जीत की इस धारा को तब तक जारी रखेगा जब तक यीशु वापस नहीं आते और अपने न्याय और आकाश और पृथ्वी के अंतिम विनाश के साथ सभी सांसारिक राज्यों को समाप्त नहीं करते, जिससे केवल एक राज्य शेष रहेगा जिसमें संत आनन्दित होंगे।

निर्गमन इस राज्य (इस्राएल की जाति) के प्रारंभिक चरण के गठन की कहानी है और इन सांसारिक राज्यों में से एक, मिस्र, की हार की कहानी है।